महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE

ज्ञान को जीवन से जोड़ेगी भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षा: डॉ. अमोल अंधारे

हिंदी विवि में पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा के एकीकरण विषयक छः दिवसीय आवासीय कार्यक्रम का समापन

वर्धा, 09 फरवरी, 2026 : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्वावधान में मदन मोहन मालवीय शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त सहयोग से "पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा के एकीकरण" विषय पर छः

दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन 07 फरवरी को किया गया। यह कार्यक्रम 02 फरवरी से आयोजित हुआ।

आयोजन के संपूर्ति सत्र में यूजीसी से पधारे मुख्य अतिथि संयुक्त सचिव डॉ. अमोल अंधारे की उपस्थिति रही। उन्होंने सत्र को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय को इस कार्यक्रम की सफलता की बधाई दी। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा जैसे विषय पर इस प्रकार के आयोजन ज्ञान को जीवन से जोड़ने जैसा सफल मार्ग तैयार कर देंगे। सम्पूर्ति सत्र के अवसर पर दत्ता मेघे कॉलेज ऑफ फार्मेसी के अधिष्ठाता सुरेश अग्रवाल एवं निदेशक एमएमटीसी प्रो. अवधेश कुमार ने भी भारतीय ज्ञान परंपरा पर अपना उद्बोधन दिया। इस आवासीय कार्यक्रम का उद्देश्य उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रभावी ढंग से पाठ्यक्रमों में समाहित करना तथा शिक्षकों को इसके दार्शनिक, वैज्ञानिक और व्यावहारिक पक्षों से परिचित कराना रहा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न प्रतिष्ठित विषय विशेषज्ञ अपने-अपने क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता पर व्याख्यान संपन्न हुए।

विभिन्न सत्रों में भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल तत्वों एवं दर्शन पर सत्र आयोजित हुआ। कार्यक्रम में देश के प्रतिष्ठित अकादमिक संस्थानों से विद्वान ने विमर्श किया। वहीं प्रतिभागियों के रूप में लगभग सम्पूर्ण देश के राज्यों से शिक्षक और प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

संपूर्ण कार्यक्रम के कुशल नियोजन पर निगरानी और पर्यवेक्षक की भूमिका के लिए यूजीसी द्वारा वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. कविता एस होले सभी कार्यदिवस एवं सत्रों में उपस्थित रहीं।

भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित इस कार्यक्रम में उच्चशिक्षा के पाठ्यक्रम में ज्ञान की भारतीय दृष्टियों का विकास, योग, तंत्रयुक्ति एवं अर्थशास्त्र जैसे विषयों पर चर्चा हुई। डॉ प्रफुल्ल तलवरकर, डॉ रणंजय सिंह, डॉ. मनीष एम. जाचक, प्रो. वैदेही सोवानी सहित अन्य विद्वानों ने अनेक सत्रों में मूल विषयों पर अपने विचार रखे।

कार्यक्रम में गणित, खगोल विज्ञान, रसायन विज्ञान, वास्तुकला तथा धातुकर्म जैसे वैज्ञानिक विषयों में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका पर विस्तृत चर्चा हुई। वहीं कृषि, वनस्पति विज्ञान, जल प्रबंधन जैसे जीवनउपयोगी विषयों पर डॉ. आकाश गेडाम, डॉ. पद्मजा जोशी, डॉ. प्रवीण घोसेकर, डॉ. सुयश प्रधान एवं डॉ. कविता बियानी एवं डॉ. निलेश पवार ने विस्तृत व्याख्यान दिये।

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in **वेबसाइट/Website:** www.hindivishwa.org
दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

कार्यक्रम के अंतिम दिवस पर सम्पूर्ति सत्र का संचालन कार्यक्रम के समन्वयक डॉ संदीप कुमार वर्मा ने किया तथा संयोजक द्वय डॉ रणंजय सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने मंच पर उपस्थित अतिथियों को प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षण पद्धति, पारंपरिक भारतीय शिल्प एवं कौशल तथा नीतिशास्त्र जैसे विषयों पर सुसंगत दृष्टि प्रतिपादित करती है। इसके व्यापक दृष्टिकोण देश को विकसित भारत बनाने में योगदान देगा।

ज्ञानाला जीवनाशी जोडते भारतीय ज्ञानपरंपरेची शिक्षणदृष्टी : डॉ. अमोल अंधारे

हिंदी विश्वविद्यालयात भारतीय ज्ञानपरंपरेच्या एकात्मतेवरील सहा दिवसीय निवासी कार्यक्रमाचा समारोप

वर्धा, ०९ फेब्रुवारी २०२६ : विश्वविद्यालय अनुदान आयोगाचे मदन मोहन मालवीय शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र व महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा यांच्या संयुक्त सहकार्याने अभ्यासक्रमात भारतीय ज्ञानपरंपरेचा समावेश या विषयावर आयोजित सहा दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रमाचा समारोप ०७ फेब्रुवारी रोजी करण्यात आला. हा कार्यक्रम ०२ फेब्रुवारीपासून आयोजित करण्यात आला होता.

समारोप सत्रात यूजीसीचे संयुक्त सचिव डॉ. अमोल अंधारे यांनी कार्यक्रमाच्या यशस्वी आयोजनाबद्दल शुभेच्छा दिल्या. भारतीय ज्ञानपरंपरेसारख्या विषयावरील अशा प्रकारचे उपक्रम ज्ञानाला जीवनाशी जोडण्याचा प्रभावी मार्ग निर्माण करतात, असे ते म्हणाले.

दत्ता मेघे कॉलेज ऑफ फार्मसीचे अधिष्ठाता सुरेश अग्रवाल तसेच एमएमटीसीचे संचालक प्रो. अवधेश कुमार यांनीही भारतीय ज्ञानपरंपरेवर आपले विचार मांडले. कार्यक्रमाचा मुख्य उद्देश उच्च शिक्षणात भारतीय ज्ञानपरंपरेचा अभ्यासक्रमांमध्ये प्रभावीपणे समावेश करणे तसेच शिक्षकांना तिच्या तत्त्वज्ञानात्मक, वैज्ञानिक आणि व्यावहारिक पैलूंशी परिचित करून देणे हा होता. कार्यक्रमादरम्यान देशातील विविध प्रतिष्ठित विषयतज्ज्ञांनी आपापल्या क्षेत्रातील भारतीय ज्ञानपरंपरेची उपयुक्तता अधोरेखित करणारी व्याख्याने दिली.

विविध सत्रांमध्ये भारतीय ज्ञानपरंपरेचे मूलतत्त्वे आणि तत्त्वज्ञान यांवर सविस्तर चर्चा करण्यात आली. देशातील नामवंत शैक्षणिक संस्थांतील विद्वानांनी या चर्चेत सहभाग घेतला. तसेच देशाच्या जवळपास सर्व राज्यांतून शिक्षक व सहभागी या कार्यक्रमात उपस्थित होते. संपूर्ण कार्यक्रमाच्या नियोजनावर देखरेख व पर्यवेक्षकाची भूमिका बजावण्यासाठी यूजीसीकडून नियुक्त ज्येष्ठ प्राध्यापिका डॉ. कविता एस. होले सर्व कार्यदिवस आणि सत्रांमध्ये उपस्थित होत्या.

या कार्यक्रमात उच्च शिक्षणाच्या अभ्यासक्रमात भारतीय दृष्टीकोनातून ज्ञानाचा विकास, योग, तंत्रयुक्ती आणि अर्थशास्त्र यांसारख्या विषयांवर सखोल चर्चा करण्यात आली. डॉ. प्रफुल्ल तलवारकर, डॉ. रणंजय सिंह, डॉ. मनीष एम. जाचक, प्रो. वैदेही सोवानी यांच्यासह इतर अनेक विद्वानांनी विविध सत्रांत मूलभूत विषयांवर आपले विचार मांडले तसेच गणित, खगोलशास्त्र, रसायनशास्त्र, वास्तुकला तसेच धातुकर्म यांसारख्या वैज्ञानिक विषयांमध्ये भारतीय ज्ञानपरंपरेच्या भूमिकेवर सविस्तर चर्चा झाली. तसेच कृषी, वनस्पतीशास्त्र आणि जलव्यवस्थापन यांसारख्या जीवनोपयोगी विषयांवर डॉ. आकाश गेडाम, डॉ. पद्मजा जोशी, डॉ. प्रवीण घोसेकर, डॉ. सुयश प्रधान, डॉ. कविता बियाणी आणि डॉ. निलेश पवार यांनी सविस्तर व्याख्याने दिली.

समारोप सत्राचे संचालन कार्यक्रम समन्वयक डॉ. संदीप कुमार वर्मा यांनी केले, तर संयोजक डॉ. रणंजय सिंह यांनी आभार मानले.